Session One

भारत का उपयुक्त प्रचलित नाम बुद्धस्तान

भारत का उज्जवल भूत तथा भविष्य
बुद्ध धम्म की भूमिका

लेखक

Dr. S L Dhani *Manvantaracharya*
IAS (R)
MA PhD MDPA LLL B

Formerly
Commissioner and Secretary to Haryana Government

Presently
Advocate Delhi High Court

Author of

Dr. B R Ambedkar: Man of Millennium for Social Justice (2007)
&
Politics of Gods: Churning of the Ocean (1984)

***

भारत का उज्जवल भूत तथा भविष्य

बुद्ध धम्म की भूमिका

Session One

भारत का उपयुक्त प्रचलित नाम बुद्धस्तान

***

प्रसन्नता की अभिव्यक्ति

मुझे इस सांय आप जैसे विद्वान लोगों के मध्य उपस्थित हो कर अपार हर्ष हो रहा है। यह प्रसन्नता मुझे आप के साथ साथ आयोजकों ने प्रदान की है जिन में सब से प्रमुख हैं श्री निखिल सबलानिया जिनके बारे में यह आसानी से कहा जा सकता है कि उनके जवान कन्धों पर परिपक्व सिर है, He has old head on young shoulders.

निखिल सबलानिया की लग्न और समाज के लिये सेवा भाव का ज्वलन्त उदाहरण मुझे उस समय देखने को मिला जब लगभग दो मास तक हरियाणा के भगाना गांव के लोग उस गांव के उच्चवर्ग के लोगों के उत्पीड़न के शिकार होने के कारण जन्तर मन्तर रोड़ पर धरने पर बैठे रहे और उनकी सुध बुध लेने के लिये कोई नहीं आया तब उनकी सेवा में इन्होंने रात और दिन एक कर डाला और रोजाना उनके चाय और नाश्ते का इन्तजाम ये अकेले ही करते रहे और कितने ही प्रदर्शनकारियों को अपने घर में ही आश्रय देते रहे।

साथ ही वे कितने ही activists को अपनी गाड़ी में बिठा कर प्रदर्शनकारियों से मिलवाते रहे। वे 31 वर्ष की आयु में ही फिल्म मेकर बनगये और इस माध्यम से उन्होंनं अपनी अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बनाली। यही नहीं अपने सेवा भव को अधिक विस्तार देने के उद्देश्य से वे आज LL B के विद्यार्थी भी हैं। मेरी हार्दिक कामना है कि वे जल्दी ही कम से कम दलित जगत में सूर्य बन कर चमकें।

इसके लिये मैं उनका और आप सब का अत्यन्त धन्यवादी हूं। आयोजक इस बात के लिये भी धन्यवाद के पात्र हैं कि मुझ जैसे साधारण व्यक्ति को एक अति महत्वपूर्ण विषय पर अपने विचार व्यक्त करने का उन्होंने अवसर प्रदान किया है।

गोष्ठी का उद्देश्य

इक्कीसवी शताब्दी में किसी भी विशिष्ट समूह का किसी भी बहाने से आपसी विचार विमर्श का उद्देश्य उनकी आधुनिक समस्याओं के सुलझाने का सशक्त प्रयत्न ही हो सकता है। उधर हमें अपनी चिन्ता के साथ देश के भविष्य को उज्जवल बनाने की दिशा में भी अपना योगदान देना चाहिये।

इसी आशय के दृष्टिगत आज की गोष्ठी का विषय जो रखा गया है उसका शीर्षक है

भारत का उज्जवल भूत तथा भविष्य: बुद्ध धम्म की भूमिका

इस सभा में मुख्य रूप में भारत के मूलनिवासी आमन्त्रित हैं जिनमें ऐतिहासिक रूप में वे लोग आते हैं जिन्हें भारतीय संविधान में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों एवं अन्य पिछड़े वर्गों के रूप में इंगित किया गया है।

इन तीनों वर्गो का पिछड़ापन किसी न किसी रूप में कट्टरवादी हिन्दु धर्म के कारण माना जाता है। इसका अर्थ यह है कि इन वर्गो के सामूहिक और अनेक प्रकार के पिछड़ेपन, शोषण और दमन में हिन्दुधर्म की भूमिका का अवलोकन न केवल आवश्यक है बल्कि अनिवार्य है।

गोष्ठी के सम्बन्ध में ध्यान योग्य बातें

1. मैं एक विचारक हूँ। दलित भी हूँ और न केवल दलित बल्कि हर उस व्यक्ति का हित चिन्तक हूँ जो राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक स्वार्थों के कारण शोषित है और पीड़ित है।
2. मैंने अन्य धर्मो के समान ही बौद्धधर्म को भी विश्लेषणात्मक दृष्टि से देखा है और मेरी सीमित योग्यता और साधनों की सहायता से उनका वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन किया है।
3. जिन कारणों से शोषित और पीड़ित वर्ग अपनी दयनीय स्थिति को प्राप्त हो चुका है और आज भी बाबा साहिब डा. Dr. B R. Ambedkar के मार्गदर्शन और भारतीय संविधान के लागू होने के 56 वर्ष पश्चात् भी दिशा भ्रमित है। उन कारणों के इतिहास से सम्बन्धित इतनी छपी हुई सामग्री है जिसको केवल पढ़ने में भी एक जीवन काफी नहीं है फिर भी मैं रोटी रोजी कमाने के साथ साथ पर्याप्त शैक्षणिक योग्यतायें प्राप्त करके अनेक पुस्तकों का गहन अध्ययन और विश्लेषण भी कर सकां हूं।
4. किसी भी व्यक्ति के बारे में यह कहा जा सकता है कि वह पूर्ण या Perfect नहीं हैं। इसलिये जो कुछ मेरे द्वारा या दूसरों के द्वारा कहा या सुना जायेगा। उसको विचारणीय सामग्री के रूप में ही देखना लाभदायक होगा न कि अन्तिम सत्य के रूप में।
5. अंग्रेजी भाषा में कहावत है कि Facts are sacred but opinion is free अर्थात तथ्य पवित्र हैं और उन पर किसी की भी राय मुफ्त है। इस लिये जो मैंने कहा है वह भी मेरी अपनी राय में ठीक है। प्रत्येक व्यक्ति को अपना अलग नजरिया रखने का अधिकार है। यहां पर हम सब शिक्षित लोग हैं। सबके पास जीवन का अनोखा तजुर्बा है। इसलिये उन से यह आशा की जा सकती है कि वे जानते हैं कि किसी भी प्रपत्र या लेक्चर के बारे मे यह नियम है कि वक्ता बिना टोके जाने के अपने विचार लगभग पोना घंटा तक प्रस्तुत करता है और उसके बाद लगभग 15 मिनट का प्रश्नोत्तर सैशन होता है।
6. वैसे तो विद्वान श्रोताओं की दिलचस्पी वक्ता द्वारा दिये गये तथ्यों और उसके बोलने की शैली पर निर्भर होती है। फिर भी मैं यह अनुरोध करूंगा कि मेरे विचारों को उपयुक्त ग्राह्यता के साथ निम्न कारणों से सुनने का प्रयास करें:

- मेरा जीवन 80 वर्ष पूर्व ऐसे हालात में आरम्भ हुआ था जो यहां उपस्थित किसी भी व्यक्ति के जीवन से ज्यादा डरावना और कठिन था।
- मेरे पिताजी की प्रेरणा स्वरूप मैं स्कूल में प्रवेश भी ले सका और आरम्भ से ही प्रत्येक तथाकथित उच्च जातियों के लोगों को कामयाब चुनोति देता रहा।

इस प्रकार यह माना जा सकता है कि मेरे पास आप के साथ ींतम करने के लिये काफी तजुर्बा और विचार हो सकते हैं।

बाबा साहिब डा. अम्बेडकर का अभूत पूर्व अभियान और उनकी सफलता

बाबा साहिब डा. अम्बेडकर ने दलितों पर होने वाले हर प्रकार के अन्याय, शोषण और दमन के इलाज के बारे में बुद्धधर्म को एक सशक्त हथियार माना था। उनका जन्म तो उनके अपने अनुसार हिन्दुधर्म में हो गया था जिस पर उनका वश नहीं चल सकता था परन्तु अपने परिनिर्वाण से 20 वर्ष पहले वे यह प्रण अवश्य ले चुके थे कि वे हिन्दु धर्म में मरेंगे नहीं।

उनके प्रण के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि प्रण लेते समय उनका निश्चय यह नहीं था कि वे बुद्धधर्म को ही अपनायेंगे। उधर यह भी सच है कि बुद्धै धर्म की दीक्षा लेने से पहले उन्होंने धर्म परिवर्तन के बारे में अन्य विकल्प ढूंढने के भी प्रयास किये थे जिनमें इस्लाम और सिक्ख धर्म शामिल है।

इससे यह भी अर्थ निकलता है कि उन्होंने यह खोज करने का प्रयत्न भी किया था कि यदि हिन्दु धर्म पिछड़े लोगों का बड़ा शत्रु है तो दूसरे धर्मो में उनके सर्वांगीन उत्थान और उन्नति के सम्दन्ध में कौन सा धर्म अधिक उपयुक्त होगा। इसका अभिप्राय यह लगता है कि उनका असल भाव बुद्ध धर्म का प्रचार करना नहीं था बल्कि उनका निशाना पिछड़े वर्ग के राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक विकास और उन्नति था।

प्राचीन क्रान्तियों के सफर की संक्षिप्त कहानी

1. भारत का इतिहास 6000 साल पीछे तक जाता है। उस समय के भारत मूलवासियों का भारत था तब तक विदेशी आर्य यहां नहीं आये थे । वह युग भारत की आजादी का युग था। उस काल की सभ्यता और संस्कृति सारे संसार में सब से उत्कृष्ट थी। भारत में बाद में आने वाले सारे चिदेशी लोग जंगली और असभ्य थे। जंगली लोगों से सभ्य लोग हार ही जाते हैं इसलिये हमारे पूर्वज भी आर्यें से हार गय।
   इस प्रकार वैदिक धर्म के साथ इस देश में दासता का युग पहली बार आया।
2. आज के अनुसंधान कर्त्ताओं के अनुसर भी वैदिक काल 1500 BC में आरम्भ हुआ था। उसकी पकड़ मजबूत करने में 500 साल लगे थे। हम जानते हैं कि वैदिक धर्म समाज को अनेक टुकड़ों में बोटने और अपने विरोधियो के शोषण और दमन की नीति पर आधारित था। उसका सशक्त विरोध कम से कम 100 साल तक चला था तब जा कर वैदिक धर्म के लोगों ने अपने अन्त के भय से उसका पुनरुत्थान करने की गर्ज से सारी

सभ्यता के विनाश की योजना बना कर महाभारत युद्ध करवाया था। म्हाभारत महाकाव्य की तिथि 850 BC निश्चित की गई ळें
इसका उद्देश्य गीता के उस उस श्लोक से स्पष्ट होता है जिस में कहा गया है कि
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि....

3. अपने घर में आग लगाने की युद्ध की यह पहली मिसाल है जो आयों ने कायम की थी। देश को हर तरह से कमजोर पा कर दूसरे महत्वशाली विदेशी समूह ने देश पर गिद्ध की नजर डाली।भगवान बुद्ध के जन्म से पहले ईरान ने हमला करके इसको अपने स साम्राज्य का 20वां प्रान्त बनाया। भारत की दासता की इस मिसाल का भद्दा सेहरा इसी वैदिक सभ्यता को जाता है।

दासता की यह दूसरी कहानी 600 BC में आरम्भ होती है।

4. उसी काल में भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था जिन्होंने दिशाभ्रमित समाज को उबारने वाला संदेश दिया था। उक्त संदेश को शक्तिशाली होने में 300 साल लगे थे तब जा कर शूद्रों का पहले नन्द वंश 423 BC में स्थापित हुआ था। वह साल वैदिक धर्म की सत्ता छिन्न जाने का पहला साल था।
सकारात्मक रूप में युग परिवर्तन की यह पहली मिसाल है। इसका अर्थ यह है कि आज के मूलनिवासियों का अपनी खोई हुई आजादी का सपना शेख चिल्ली की कहानी जैसा नहीं है।

5. बाद में मूलनिवासियों के मौर्य वंश के साम्राज्य की स्थापना हुई थी। चन्द्रगुप्त मौर्य ने 321 BC में सत्तारूढ़ हो कर भारत को स्वतन्त्रता दिलवाई थी। अशोक मौर्य ने राजपाट 296 BC में संभाला था जिन्होंने भारत के साम्राज्य को उस समय तक जाने गये संसार में फैलाया था। भारत की आजादी तब 800 AD तक निरंकुश रूप मे कायम रही थी।

6. ईरान की दासता वैदिक युग की उन्नति का परिणाम थी। बुद्धकाल और भारत की आजादी एक दूसरे के पर्याय हैं । बाबा साहिब द्वारा बुद्ध धर्म के उत्थान को मूलवासियों के हाथ में इस देश की बागडोर के हाथ में चले जाने के प्रबल संकेत हैं।

7. मुसलमानों का पहला आक्रमण 712 AD में हुआ था। बुद्ध धर्म के प्रभाव के कारण ही मुस्लिम साम्राज्य स्थापित होने में 300 साल से अधिक समय लगा था। मुस्लिम साम्राज्य के स्थापित होने में सहायता वर्ण व्यवस्था के नेता ब्राह्मण वर्ग ने अपने विरोधी बौद्ध धर्म को ध्वस्त करने के उद्देश्य से दी थी जिसके सूत्रधार कुमारिल भट्ट और शंकराचार्य बने थे। शंकराचार्य की मृत्यु 820 AD में हुई थी। उस समय तक सारे देश के शासक बौद्ध राजा थ। यथा राजा तथा प्रजा के सिद्धान्त के आधार पर सभी राजाओं की प्रजा बौद्ध ही थी।

8. शंकराचार्य ने कौटिल्य के समान कुटिल नीति की सहायता से राजाओं को मुसलमानो के आक्रमणों का भय और अपनी सहायता का प्रलोभन देकर राजाओं को अपनी साजिश में शामिल कर लिया । राजाओ के धम्माधिकारी बौद्ध होते थे। फलस्वरूप धम्माधिकारियों और शंकराचार्य के बीच अचानक शास्त्रार्थ का आयोजन कराया गया जिसकी अध्यक्षता राजा ने की। शास्त्रार्थ आरम्भ करने से पहले यह शर्त रखी कि बहस करने में जो भी हारेगा वह जीतने वाले का धर्म अपनायेगा। उसमें यह अपवाद भी रखा कि यदि बौद्ध धम्माधिकारी हारता हैं तो राजा को भी शंकराचार्य का वैदिक धर्म अपनाना होगा और शंकराचार्य ही राजपुरोहित होगा।
इस प्रकार से वैदिक धर्म वालों ने छल से बौद्ध या तत्कालीन हिन्दु जनता को बिना दीक्षा दिये ही वैदिक धर्मी मान लिया।आज की आम जनता केवल इस तथ्य की सचाई जान कर ही फिर से प्रजातान्त्रिक ढंग से राजनीतिक सत्त हासिल कर सकती है।

भारत का वास्तविक इतिहास 6000 साल पहले आरम्भ होने के प्रमाण उस सभ्यता के अवशेषों में मिलते हैं जिसको जाति पांति के कर्णधारों ने सिन्धु घाटी का नाम दिया है । उस सभ्यता के अवशेष सिन्ध प्रन्त से आरम्भ हो कर महाराष्ट्र तक फैले पडे हैं। यदि भारतीय विश्वविद्यालयों का वास्तविक संचालन 90 % जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले आम आदमी के हाथ में होता तो वह जातिविशेष के दलदल से निकल कर देश हित में प्राचीन भारतीय सभ्यता का नाम देता। उसको सिन्धु घाटी का नाम देने के कारण उसका श्रेय आज पाकिस्तान को ही जा सकता है।

मोहंज दडो (Mound of the Dead) और हड़प्पा की खुदाई 1920 के आस पास हुई थी। उस समय इंडियन नैशनल कान्ग्रेस और अंग्रेजी साम्राज्य के बीच अच्छा ताल मेल चल रहा था। 1912 में नई दिल्ली राजधानी की नींव रखी जा चुकी थी । तब (पण्डित) मोतीलाल नेहरु को किंग्जवे कैम्प के विशाल मैदान में लगे शाही कैम्प में अत्यन्त प्रमुख शाही महमान थे, 1913 में रवीन्द्र नाथ (ठाकुर) को नोबेल पुरस्कार मिल चुका था, 1915 में महात्मा गान्धी (वैश्य) को दक्षिणी अफीका में रहते समय अंग्रेजी साम्राज्य की अत्यन्त प्रकृष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में कैसर इ हिन्द गोल्ड मैडल भी प्राप्त हो चुका था और 1921 में महात्मा गान्धी इंडियन नैशनल कान्ग्रेस के Life Time Dictator बन चुके थे।
यह देश की अस्मिता पर एक कलंक के बराबर था।

मनुस्मृति के विधानानुसार साम्राज्य के साथ गुप्त समझोते के अधीन ब्राह्मणों को शिक्षा, धर्म और न्याय सम्बन्धी विशेषाधिकार, क्षत्रियों को शस्त्रधारी फोज और पुलिस की कमान और वैश्यों को धन के उपार्जन तथा वितरण के विशेषाधिकार दिये जा चुके थे और शूद्रों को Land Settlement के अधीन हर प्रकार के अधिकार से वंचित रखते हुए उक्त तीनों वर्णों के दास के रूप में अंग्रेजों के साथ इसी मिली भगत के कारण स्थापित किया जा चुका था। इस प्रकार हिन्दु नेतृत्व अंग्रेजों का गुलाम होते हुए भी 90 प्रतिशत आम जनता का स्वामी बनाया जा चुका था।

आम जनता के निचले स्तर पर मूलनिवासियों के नीचे और बस्तियों से बाहर अछूत बना कर रखा गया था। विश्लेषणात्मक दृष्टि से देखा जाये तो आम जनता को शूद्र वर्ग में उन लोगों को रखा गया था जो पहले इस प्रकार के बौद्ध थे जिन्हों ने स्वयं को वैदिक धर्म के अनुयायी या ब्राह्मणों का पिटठू मानने से इनकार कर दिया था या ब्राह्मण धर्म से अपने खोये सम्मान को दोबारा हासिल करने के लिये लम्बा संघर्ष जारी रखा था। कहना न होगा कि क्षत्रियों और वैश्यों ने इस प्रकार के आत्म सम्मान की भावना की अभिव्यक्ति दिखाने की गलती नहीं की थी।

प्राचीन बौद्ध कभी वैदिक धर्मी नहीं बने

देख चुके हैं कि छल कपट के बल पर सारी बौद्ध जनता को वैदिक धर्म की दीक्ष दिलाये ही बौद्ध जनता को वैदिक धर्मा मान लिया गया जिनको पहले ही बुतपूजक होने के नाते हिन्दु कहा जाता था। संसार में इस प्रकार के छल का दूसरा उदाहरण मिलना आसान नहीं है जिसमें एक धर्म के लोगों ने उनका नाम ही चुरा लिया हो। परन्तु उन्हों ने स्वयं ही ऐसा आचरण फिर दोहराया जब बौद्ध श्रमणों का नाम चुरा कर ब्राह्मणों ने स्वयं को शर्मा कहना आरम्भ कर दिया।

मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना और भारत में वैदिक धर्म का पुनरुत्थान का चोली दामन का साथ था। उसका एक और कारण यह था कि मुस्लिम शासकों ने इनाम के रूप में और ब्राह्मण

पुरोहितों की प्रार्थना पर उनको हिन्दु जनता पर मनुस्मृति के आधार पर मनमानी करने की छूट मिल गई।

इनकी मिली भगत सूफी मत और हिन्दु भक्ति काल से भी स्पष्ट है। औरंगजंब के भाई दारा शिकोह के द्वारा मुस्लिम देशों की सहायता से लोप हुए 200 उपनिषदों को ढूण्ढ कर ब्राहणिों को सांप देना भी यही सिद्ध करता है।

इस्लाम ने बुद्ध पूजकों या बौद्धों को हिन्दु माना

जैसा कि बताया जा चुका ळे, पहले पहल इस्लाम ने बुद्ध पूजकों या बौद्धों को हिन्दु माना था। ब्राह्मणों और मुसलमान आकमणकारियों ने मिल कर बौद्ध भिक्षुओं और बुद्ध को पहचान देने वाली धरोहरों को नष्ट किया । तब तक सारे देशवासियों का ही हिन्दु कहा जाने लगा था । बौद्धों के नेतृत्व के समाप्त होने के पश्चात् बौद्ध भिक्षुओं, भिक्षुणिओं को मारा या दास और दासियां बनाया और साथ ही बौद्ध विहारों को लूटा और ध्वस्त किया । जो बाकी बौद्ध उपासक बचे उनको ब्राह्मणों ने बनावटी सहानुभूति दिखा कर अपनी वर्ण व्यवस्था में स्थान दे दिया । दूसरी और सभी बौद्ध मान्यताओं को अपना लिया । साथ ही बचे विहारों में बुद्ध की प्रतिमाओं के बराबर में अपने देवी देताओं की प्रतिमायें भी स्थापित कर दीं । इस प्रकार बौद्ध उपासकों को औपचारिक रूप में धर्म चरिवर्तन कराये उनको अपने नुयायी बताने लगे।
वैदिको ने बुद्ध के मध्यम मार्ग का भी खुल कर प्रयोग किया जो इन बातों से स्पष्ट ळें

1. बुद्ध को भगवान कहा जाता था। वैदिकों ने अपने सभी बेवताओं को भगवान कहना शुरु कर दियज्ञं
2. बुद्ध स्वयं को आर्य कहते थे तो वैदिको ने भी यह पद्धति अपना ली।
3. बुद्ध ने स्त्री का सम्मान छिया तो वैदिको ने भी उनको देवी की उपाधि देदी।
4. बुद्ध ने अपने मार्ग को धम्म सनातन कहा है तो वैदिको ने भी वैदिक धर्म को सनातन धर्म कह डाला।
5. बुद्ध की मूतियों की पूजा होती थी तो वैदिको ने भी अपने देवताओं की मूतियां बना ली।
6. बुद्ध विहारो की नकल करके वैदिको ने भी भव्य मन्दिर बना लियैं
7. बुद्ध ने कान्ति का आरम्भ मध्यम मार्ग से किया तो वैदिको ने भी अब तक उस मार्ग को नहीं छोडा है और दूसरे धर्मो को भारत में पनपने नहीं दिया ळें

इस्लाम पहले मुख रूप में बौद्ध धर्म विरोधी था

मूर्तिपूजा के लिये फारसी शब्द बुतपरस्ती है। मध्य एशिया में सबसे पहले बुद्ध के बुत बने थे। वे उस समय बने थे जब लगभग 300 ई. पू. में अशोक मौर्य ने बुद्ध धर्म का प्रचार भारत देश से बाहर किया था। जिस प्रकार आज के कश्मीर इलाके में धर को दर और भारत को बारत बोला जाता है इसी प्रकार मध्य एशिया में ध अक्ष्र को द बोला जाता है जिसका परिवर्तित रूप त हो गया । इस दृष्टि से बुद्ध शब्द पहले बुद बना और बुद्धपरस्ती बुदपरस्ती बन गई। उच्चारण की सुविधा स्वरूप बुद शब्द ने बुत का रूप ले लिया।

विकास की दृष्टि से देखा जाये तो कोई भी नया धर्म लोगों की धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को हल करने के उद्देश्य से या नया विकल्प प्रस्तुत करने के अभिप्राय से होता है। यदि इन समस्याओं का मुख्य कारण धर्म विशेष हो तो उसका विकल्प ढूंढ़ने का सीधा सा तरीका यह होता है कि प्रचलित विचारधारा, सिद्धान्तों और प्रथाओं को आत्मसात कर नये

विकल्पों का सुझाव देकर उन्हें प्रचारित किया जाय। इस आवश्यकता के दृष्टिगत अरब देश में बौद्ध धर्म या बुत धर्म या बुतपरस्ती को समाप्त करने का उद्देश्य पीरों की कब्रों की पूजा के शुरु होने से सहज ही सामने आ गया।

इसी प्रथा का सहारा लेकर आज के हिन्दुओं ने मुस्लिम पीर साई बाबा पर एकाधिकार जमा लिया है तथा मुसलमानो का धन भी लेना शुरु कर दिया है।

किसी बौद्ध के हिन्दु बनने का उदाहरण नहीं

चूंकि 300 ई0पू0 से 800 ई0 तक अर्थात् 1100 सालों तक बौद्ध रहे और इसी लिये आजाद रहे। इतने लम्बे समय तक और बाद में भी किसी भी भारतीय ने वैदिक वर्ण व्यवस्था नामक तथाकथित हिन्दु धर्म में औपचारिक रूप में धर्म परिवर्तन करने का कोई प्रमाण या औचित्य नहीं मिल पाए। यह मानना तर्कसंगत होगा कि समस्त देशवासी आज भी बौद्ध ही हैं। इस वास्तविकता की ओर बस सब का ध्यान आकर्षित करवाने की ही आवश्यकता है। यह आवश्यकता आज की इस गोष्ठी के माध्यम से आप सब पूरी कर सकते हैं।

दूसरी ओर बौद्ध बनने के लिये किसी औपचारिकता की जरूरत भी नहीं है क्योंकि उसके लिये प्रबुद्ध अर्थात् पूरी तरह से जागृत ही होना है जिसका मापदण्ड प्रत्येक व्यक्ति स्वयं हैं। निश्चय ही इसी कारण से बुद्ध ने यह आदेश दिया होगा कि "अपने दीपक आप बनो। मेरी बात को इसलिये सच मत मानों कि इसे मैने कहा है। बल्कि उस पर विचार करो और अपना स्वतंत्र निर्णय लो। भगवान बुद्ध ने स्वयं कहा था कि वे किसी नये धर्म की स्थापना करने नहीं जा रहे हैं।" उनका अभिप्राय केवल इतना ही है कि जो भी मन, वचन या कर्म से करो उसे तर्क की कसोटी पर कसके करो।

भारत का दूसरा नाम बुद्धस्तान उपयुक्त है न कि हिन्दुस्तान

हिन्दु शब्द आज के तथाकथित हिन्दुधर्म का वास्तविक द्योतक नहीं है। तथाकथित हिन्दुधर्म के नेता अपने धर्म को वैदिक धर्म मानते हैं। इनमेंउन लोगों को सम्मिलित किया जाता हैं जो स्वयं को उदारबादी मानते हैं। स्वयं कट्टरवादी मानने वाले अपने आपको सनातन धर्मी कहते हैं और ऋगवेद में वर्णित वर्णव्यस्था में इस सीमा तक दृढ़ विश्वास रखते हैं कि वे वर्णव्यवस्था के शोषणात्मक, दमनात्मक, मानवता विरोधी, स्वार्थ पूर्ण एवं अनैतिक रूप को भी आंख मूंद कर न केवल स्वीकार करते हैं बल्कि उसका धड़ल्ले से प्रचार करते हैं। चाहे वर्ण व्यवस्था के सिद्धान्त में वास्तव में गर्व करने लायक कुछ भी नहीं है। फिर भी वे कहते हैं कि गर्व से कहो हम हिन्दु हैं।

जिस हिन्दु शब्द पर जातिवाद को मानने वाले गर्व करते प्रतीत होते हैं, वह फारसी शब्द है जिसका अर्थ चोर, डाकू, राहजन, नास्तिक और काफिर आदि है। कई लोग गलत तौर पर मानते हैं कि यह नाम "हिन्दुओं" को मुसलमानों ने दिया था। वास्तविकता यह है कि इस्लाम धर्म का हिजरी संवत तो 622 ई. से आरम्भ होता है जब कि उनके और आसपास के देशों में बोली जाने वाली भाषा हज़ारों वर्ष पुरानी है। और उस पुरानी भाषा का एक शब्द हिन्दु था जिसके अर्थ अभी दिये जा चुके है।